ORIGINAL RESEARCH PAPER

Social Science

KEY WORDS:

# मध्य प्रदेश की भील जनजाति

**प्रो. कैलाश सोलंकी** समाजशास्त्र (समाजशास्त्र विभाग) शासकीय आदर्श महाविद्यालय हरदा जिला हरदा

मध्य प्रदेश की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति भील है। 2011 की जनगणना के अनुसार भील जनजाति की कुल जनसंख्या 5993921 है, जिसमें पुरुष 3016445 एवं महिलाओं की कुल जनसंख्या 2977476 हैं। भील जनजाति की साक्षरता 42.2 प्रतिशत है, जिसमें 50.3 प्रतिशत पुरुष एवं 34.1 प्रतिशत महिलाएं साक्षर है। भील जनजाति में प ि चमी मध्य प्रदेश के अन्तर्गत अलीराजपुर जिला सबसे कम साक्षर वाला जिला है।

भील शब्द की उत्पति द्रविड़ भाषा के " बील " शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है – धनुष। भील जनजाति में धनुष बाण का अत्यधिक महत्व और प्रमुख हथियार एवं धनुर्विद्या में निपुण होने के कारण इनका नामकरण इसी आधार पर किया गया है, भील मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी जनजाति है।

***निवास क्षैत्र :–*** भारत में भीलों का निवास मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र राज्यों में प्रमुख रूप से निवास करते है। मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षैत्र अलीराजपुर, झाबुआ, बड़वानी, खरगोन, धार, खण्डवा ओर रतलाम जिलों में भील जनजाति प्रमुख रूप से निवास करती हैं। ये लोग अपना जीवन निर्वाह करने के लिए कृषि कार्य करके या कुछ परिवार के सदस्य मजदूरी के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन करते रहते हैं।

इस क्षैत्र में भीलों के अलावा भीलाला, बारेला, पटेलिया, राठिया एवं पालवा जनजाति भी निवास करते है।

***प्रजातीय लक्षण :–*** भील जनजाति की शारीरिक बनावट में गठीला अथवा चुस्त (फुर्तिला) शरीर, चेहरा गोल, चपटी और छोटी नाक, कद छोटा, रंग काला एवं गोरा दोनों ही प्रकार के देखने को मिलता है।

***भाषा :–*** भील जनजाति के लोग भीली भाषा का प्रयोग करते है, जिसमें हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, निमाड़ी एवं आदिवासी भाषाओं का उपयोग करते है।

***वेशभूषा :–*** भील जनजाति के लोग रंग – बिरंगें वस्त्र पहनना पसन्द करते है। पुरूष सिर पर पगड़ी, कमीज व धाती (टावेल) पहनते है, महिलाएं घाघरा चोली, लुगड़ा और ओढ़नी पहनती है। स्त्री और पुरूष में गुदवाने की प्रथा प्रचलित है। गहनों का अत्यधिक शौक होने के कारण पुरूष हाथों में चांदी की कढ़े एवं भुजाओं में हटके पहनते है। भील महिलाएं गले में चांदी की चैन, हार, टागली और हाथों में चांदी के करण्डी, झालर, बास्टिया एवं कमर में कन्दोरा, छल्ला तथा पैरों में पायजप, बिछिया आदि गहनें धारण करते हैं।

वैश्वीकरण के कारण भीलों में परिवर्तन के तौर पर पुरूष पेंट, शर्ट,जीन्स तथा महिलाएं साड़ी पहनने लगी है।

***खान–पान तथा रहन–सहन :–*** भील लोग मक्का, ज्वार, गेंहू, बाजरा की रोटी एवं चना, चवले,तुअर, मूंग आदि की दाल के रूप में खाते हैं। भील जनजाति में मक्का एवं गेंहू की राबड़ी सुबह का प्रमुख भोजन है। ये लोग मिर्ची तथा हरी सब्जी की खेती भी घर पर करते है जैसे– कटले, गिल्की, भिंडी, लौकी, बैंगन, करेला, बालर, पालक, मैंथी आदि । रोटी बनाने के लिए मिट्टी का खापरा, दाल बनाने के लिए मिट्टी का तवला एवं राबड़ी बनाने के लिए हांडी का उपयोग करते है। रोटी रखने के लिए बांस से बना मस्का, पानी के लिए मिट्टी के मटके (गुलु) जिसको लकड़ी के बने मोहली पर रखते है। अभी ये लोग पीतल, स्टील के बर्तनों का प्रयोग करने लगे है। भील त्यौहारों पर चावल,गुड़,घी तथा चावल, मांस के साथ चना, बाजरा, चावल के तायें, उड़द के बढ़े बनाकर खाते है। भील मांसाहारी होने के कारण मछली, मुर्गा, बकरा,खरगोश, तीतर, केकड़ा लावरी, कबूतर(पेरवा) आदि का मांस खाते हैं। मद्यपान भीलों की सामाजिक एवं धार्मिक आवश्यकता के अनुसार ये महुआ की शराब प्रमुख पेय पदार्थ है। ताड़ी भीलों का मौसमी और सर्वप्रिय पेय पदार्थ है, इसके साथ बीड़ी,तम्बाकू का सेवन भी करते हैं।

भीलों का रहन–सहन सादा और सरल होता है। भीलों की दैनिक आवश्यकताओं में लकड़ी की खाटली, बिछाने के लिए घर पर बनी हुई गोदड़ी एवं ओढ़ने के लिए उपयोग करते हैं। अनाज रखने के लिए बास एवं झाणियां, ओकली के पेड़ से बनी मोटी (कोठी) होती है, अनाज पीसने के लिए घट्टी, अनाज साफ करने के लिए सुपड़ा , टोपली (चारली) का उपयोग करते है।

***सामाजिक संगठन :–*** भील जनजाति के समाजों में सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था को संचालित करने के लिए गांव का पटेल, पुजारा, कोटवार, तड़वी व बड़वा गांव के प्रमुख एवं सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं। यह प्रतिष्ठित व्यक्ति गांव में त्यौहार, पर्व, विवाह आदि अपने अनुसार संचालित करते है। बीमारी या महामारी आने पर यह पूरे गांव वाले मिलकर बीमारी भगाने के लिए जादू–टोना बड़वा के द्वारा झाड़–फूंक के साथ पूरे गांव एवं गांव देव में पूजा करके कोहड़ा निकालकर गांव की सीमा के बाहर फेंककर बीमारी दूर करने का प्रयास करते है। गांव का पुजारा के द्वारा सांस्कृतिक गतिविधियां संचालित करने का कार्य किया जाता हैं। गांव में सूचना देने का कार्य कोटवार एवं तड़वी के द्वारा किया जाता है। पटेल, पुजारा,कोटवार, तड़वी के पद वंशानुगत होते है। गांव का वयोवृध्द व्यक्ति डाहला (बुजुर्ग) होता है, जिससे सभी अपने आयोजनों के समय या विभिन्न अवसरों पर मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। इन प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं गांव के डाहला (बुजुर्ग) के द्वारा गांव की समस्या एवं विभिन्न प्रकार के झगड़ों , लड़की भाग जाने पर निपटारा करना आदि में ये न्यायापालिका का काम करते हैं।

***अस्त्र–शस्त्र (हथियार ) :–*** भीलों का प्रमुख हथियार एवं अस्त्र– ास्त्र में अन्तर्गत धनुष – बाण, फालिया या धारिया एवं गोफन का प्रयोग करते हैं। भील जनजाति के लोग धनुविद्या में निपुण होने के कारण ये अंधेरें में तीर का निशाना लगाने में, गोफन से पत्थर मारने में कुशल होते है। धीरे–धीरे ये लोग कुल्हाड़ी, तलवार, लठ्ठ, एवं बन्दूक रखने लगे हैं। भील जनजाति के लोगों के हर घर में सुरक्षा के लिए धनुष – बाण एवं धारिया (फालिया) हर व्यक्ति के पास अलग – अलग उपलब्ध रहता हैं।

विवाह :– भील जनजाति में विवाह सांस्कृतिक पद्वति से होता है। इनके विवाह अंतर्गत मंगनी (जोड़ना), हल्दी लगाना (टोला), मंडप (पगड़ी या धिरसरी) बारात, बिदाई जैसे रस्म किये जाते हैं। भील जनजाति में वधू मूल्य के चलन के साथ बहू विवाह का भी प्रचलन देखने को मिलता है। भील जनजाति में घर जमाई विवाह, भाग कर सादी करना, लुगड़ा लाड़ी विवाह, विधवा होने पर देवर विवाह एवं बहू पत्नी विवाह आदि विवाह प्रकार पाये जाते हैं। भील जनजाति के लोग विवाह कार्यक्रम में शराब, बीयर एवं एक – दूसरे परिवार में विवाह पश्चात् बकरे खाने के प्रचलन से फिजूल खर्च होने के कारण भी ये लोग कर्ज में डूब जाते हैं। लड़के भगाकर ले जाने पर लड़के के परिवार पर दण्ड स्वरूप 1 लाख 3 लाख एवं बकरे, ताड़ी, दारू (शराब) , बीयर आदि लिये जाते है, जिससे भील जनजाति के लोग कर्ज होने के कारण दोनो विवाहित दम्पति कर्ज से छुटकारा पाने के लिए मजदूरी के लिए पलायन कर जाते हैं।

***आर्थिक जीवन :–*** भील जनजाति में कृषि मुख्य व्यवसाय के साथ वनोपज संग्रह, पशुपालन एवं मजदूरी करके अपना आर्थिक उपर्जन के साधन हैं। भील लोग महुआ की शराब और ताड़ी बेचकर भी ये लोग धन कमाते हैं, (विशेषकर अलीराजपुर जिलें में)। पश्चिमी मध्य प्रदेश में अनुपजाऊ जमीन और परम्परागत ढंग से खेती करने का तरीका होने के कारण भी इनकी वार्षिक आय बहुत कम होती हैं। भील जनजाति में नगरीकरण, आधुनिकीकरण एवं औद्योगिकीकरण के कारण भील लोगों के जंगल से प्राप्त होने वाली आय छिनने से भी भील जनजाति के लोगों में आर्थिक गिरावट का कारण है।

***धार्मिक जीवन :–*** भील जनजाति के लोग बाबा देव, गलदेव, बाबा कुहाजा, भीतला माता, रानी काजल माता, हनुमान बाबा, बाबा घेस्टा आदि की पूजा के साथ कुल देवता (खतरिया) एवं प्रकृति पूजक में वि वास करते हैं। ये जनजाति बाबा पिठौरा एवं बाबा इंददेव की पूजा में चित्रण में घोड़ा, हाथी, पशु–पक्षी आदि के चित्रण बनाकर साथ में कलम्बे के पेड़ के डाल (डगाल) की पूजा करते हैं।

***निष्कर्ष :–*** भील जनजाति के लोगों का जीवन गरीबी और आवश्यकताओं की चीजों के अभाव से अभिशापित है। दूसरी ओर भील जनजाति के लोगों में संस्कृति, प्रकृति का अद्भुत वरदान प्राप्त हुआ है। भील लोग अधिकांश जंगलों एवं पहाड़ी भू–भाग पर निवास करते है। भील मुख्यतः कृषि के साथ–साथ पशुपालन, महुआ एवं ताड़ी से प्राप्त आय तथा मजदूरी करके अपना जीवन व्यापन करते है, अपनी आर्थिक – सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए कठोर परिश्रम करते हैं। भील जनजाति की अपनी अलग ही भाषा, वेशभूषा, पहनावा, खान–पान एवं अपनी अलग ही संस्कृति होने के कारण पूरे वि व में पहचान बनाये हुये हैं। भील जनजाति के लोगों की सामाजिक–आर्थिक रूप से असक्षम है, ये लोग ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, मेहनती एवं प्रकृति तथा पूर्वज पूजक होते हैं।

***संदर्भ सूचि :–***

1. Majumdar D N: Races and Cultur of India, 1961 |
2. Hoebel, E A : Man in the Prinitive World 1949 |
3. हसनेन, नदीम, 2005 " जनजातीय भारत", न्यू दिल्ली : जवाहर पब्लिकेशन ।
4. हसनेन, नदीम, 2009 " समकालीन भारतीय समाज एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य", लखनऊ: भारत बुक सेन्टर ।
5. रावेन्द्र सिंह पटेल, राजू बघेल , 2014 " वैश्वीकरण चुनौतियां और संभावनाएं", दिल्ली : ए.के. पब्लिकेशन।
6. महाजन,एवं कमलेश 2007 " जनजातीय समाज का समाजशास्त्र" दिल्ली :, विवेक प्रकाशन।
7. https://www.tribal.mp.gov.in/
8. प्रो. बनवारी लाल प्रजापति, 2014 " समाजाशास्त्र " आगरा: , उपकार प्रकाशन।
9. Desai A R: Rural India in Trisition 1961 |
10. डॉ. माधवीलता दुबे , 2018 " समाजशास्त्र " भोपाल:, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
11. https://www.mp.mygov.in/ tutkrh;A